https://shikshabodh.in/

SHIKSHA BODH
(The Journal of Education and Humanities)
A quarterly, peer-reviewed/refereed journal
ISSN: 3139-5880 IMPACT FACTOR: 6.50
VOLUME-1|ISSUE-1|Jan-March, 2026

अनाथालयों के अन्तेवासी बच्चों की धर्म एवं क्षेत्र के आधार पर शैक्षिक आकांक्षा के स्तर का अध्ययन

1-डॉ राजेश पालीवाल –सह- आचार्य , शिक्षक शिक्षा विभाग, दयानन्द वैदिक कालेज, उरई, जनपद जालौन, उ0प्र0।

2- अम्बरीश बाजपेयी –शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र), दयानन्द वैदिक कालेज, उरई, जनपद जालौन, उ0प्र0।

अध्ययन -

प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में अनाथालयों के अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर का एक अध्ययन करना था। प्रस्तुत शोध कार्य के लिये शोधार्थी ने उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के जालौन, झांसी एवं महोबा जनपदों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्थित अनाथालयों, यतीमखानों, मंदिरो व मस्जिदों के)10-16 वर्ष आयु वर्ग के (80 अन्तेवासी अनाथ बच्चों का चयन किया।

की- वर्ड- अनाथालय, अन्तेवासी बच्चे, शैक्षिक आकांक्षा

प्रस्तावना -

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह समाज में रहकर ही अपना, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक एवं संवेगात्मक पक्षों का विकास करता है। इस प्रक्रिया को सामाजिक विकास की प्रक्रिया भी कहते हैं। सरल शब्दों में कहा जाये तो उसका सम्पूर्ण विकास उसके मातापिता व परिवार-, शिक्षक तथा शिक्षा के अनिवार्य पहलुओं के मध्य सम्पन्न कराया जाता है। जिसे हम सामाजीकरण कहते हैं। सामाजीकरण को परिभाषित करते हुये वोगार्डस महोदय कहते है किसामाजीकरण वह प्रक्रिया है -, जिसके द्वारा मानवदूसरे पर निर्भर होकर व्यवहार करना सीखते हैं और-कल्याण के लिये एक- ऐसा करने में सामाजिक आत्मनियन्त्रण-, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा संतुलित व्यक्तित्व का अनुभव करते हैं। इस सामाजीकरण की प्रक्रिया में बच्चे के मातापिता तथा परिवार का - पिता के मार्गदर्श-पिता होते हैं उनको अपने माता-महत्वपूर्ण योगदान होता है। जिन बच्चों के मातान के द्वारा यह भी कार्य करना आसान हो जाता है, जबकि अनाथ बच्चों के लिये यह अवसर कम हो जाते हैं। जिससे उन्हें सामाजिक सम्मान मिलना कठिन हो जाता है और समाज इन बच्चों को हेय दृष्टि से देखता है जिससे वह कुंठित हो जाते है और नकारात्मक भाव के लिये वह समाज में असमाजिक गतिविधियों में लिप्त हो जाते हैं इन्हीं कारणों से इनकी आकांक्षायें भी सामान्य बच्चों से अलग होती हैं। इसी भिन्नता के कारण शोधार्थी को प्रस्तुत विषय पर शोध कार्य करने की जिज्ञासा बढ़ी।

शोध समस्या कथन -

‘‘उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में अनाथालयों के अन्तेवासी बच्चों की धर्म एवं क्षेत्र के आधार पर शैक्षिक आकांक्षा के स्तर का अध्ययन’’

शोध समस्या में प्रयुक्त चरों का परिभाषीकरण -

अनाथालय -

इस अध्ययन में अनाथालयों से तात्पर्य उन पंजीकृत संस्थानों से है, जहां ऐसे बच्चे निवास करते हैं जो माता-पिता के अभाव

में या सामाजिकआर्थिक कारणों से परिवार से पृथक होकर संस्थागत संरक्षण में रह रहे हैं।-

अन्तेवासी बच्चे -

प्रस्तुत अध्ययन में अन्तेवासी बच्चे से तात्पर्य उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के जालौन, झाँसी एवं महोबा जनपदो में स्थित अनाथालयों एवं यतीमखानों के अन्तेवासी बच्चों से है।

शैक्षिक आकांक्षा -

जब बालक के सामने कई चुनौतियाँ जैसेआर्थिक-, सामाजिक, पारिवारिक एवं सांस्कृतिक परम्परागत होती है, जिसके कारण बालक शिक्षा के अवसरों से वंचित रहता है। शैक्षिक अवसरों की चुनौतियां होते हुये भी बालक में शिक्षा प्राप्त करने की तीव्र इच्छा होती है जिसे सामान्य रूप से शैक्षिक आकांक्षा कहा जाता है। डा0 वर्षा गौतम के अनुसार 'शैक्षिक आकांक्षा में उपलब्धि की इच्छा निहित रहती है। शैक्षिक आकांक्षा यह नहीं बतलाती कि विद्यार्थी अपना लक्ष्य प्राप्त करने में कितना सफल रहा, यह तो केवल इस बात का उल्लेख करती है कि विद्यार्थी क्या प्राप्त करना चाहता है या उसका लक्ष्य क्या है?

अध्ययन का उद्देश्य -

1- अनाथालयों में धर्म के आधार पर अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना। (हिन्दू एवं मुस्लिम)
2- अनाथालयों में क्षेत्र ग्रामीण एवं शहरीके आधार पर अन्तेवासी की शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना। (

अध्ययन की परिकल्पा -

1- अनाथालयों में धर्म के आधार पर अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर कोई सार्थक अन्तर (हिन्दू एवं मुस्लिम) नहीं है।
2- अनाथालयों में क्षेत्र)ग्रामीण एवं शहरी(के आधार पर अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन की परिसीमायें -

1- शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के जालौन, झाँसी एवं महोबा जनपदों को लिया गया है।
2- इस शोध अध्ययन में जालौन, झांसी, एवं महोबा जनपदों के)10-16 वर्षआयु वर्ग के अन्तेवासी बच्चों को किया गया है। (
3- इस शोध अध्ययन में 80 अन्तेवासी अनाथ बच्चों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन -

1- दास, सन्मय)2024) ने वर्तमान स्थिति में अनाथालयों के बच्चों की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन कर पाया कि वे औपचारिक शिक्षा में अधिक रुचि रखते है। अनाथ बच्चों की आकांक्षायें सामान्य बच्चों से कुछ कमजोर होती हैं। इसी कारण अनाथ बच्चों में अनुचित व्यवहार उत्पन्न हो जाता है। जिसका प्रभाव उनकी शिक्षा पर भी पड़ता है।
2- शिव नरायन)2023) ने सामान्य वर्ग एवं आरक्षित वर्ग की शैक्षिक आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन कर ज्ञात किया कि सभी विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि समान रूप से होती है या सामान्य वर्ग एवं आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों को शैक्षिक आकांक्षा में कोई अन्तर नहीं है।
3- गुप्ता, राधा)2023) ने स्नातक स्तर के छात्रछात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं का उनकी सांवेगिक बुद्धि के सन्दर्भ में -छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं पर बुद्धि का सांवेगिक सकारात्मक प्रभाव -अध्ययन कर पाया कि स्नातक स्तर के छात्र पड़ता है।
4- रानी, पूनम)2023) ने अनाथ व सामान्य छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन 80 छात्रों पर किया जिसमें 40 बच्चे, अनाथ और 40 सामान्य या सनाथ बच्चे थे। इस अध्ययन में पता चला कि अनाथ और सामान्य छात्रों के बीच शैक्षिक आकांक्षा के स्तर में महत्वपूर्ण अन्तर था। सामान्य छात्रों की शैक्षिक आकंक्षा का स्तर अनाथ छात्रों की तुलना में अधिक था।
5- चण्डहोक, दिव्या)2023) ने प्राथमिक शिक्षकों के आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक संतुष्टि से सम्बन्ध के अध्ययन में पाया कि गुण और दोष आकांक्षा को प्रभावित करते है यह गुण या दोषों का विकास उनके माध्यमिक स्तर की शिक्षा से

प्रारम्भ हो जाते हैं और बालक व बालिकाओं में इनका स्तर भिन्नभिन्न होता है।-

6- कुमावत, सुनीता)2022) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। बालक के अन्दर सृजन की, कुछ नया करने की असीम सम्भावनाएँ छिपी होती हैं। किसी में गाने की, किसी में अभिनय करने की, किसी में लेखन या चित्र बनाने की, कोई खेलने में तो कोई पढ़ने में आगे होता है बस जरूरत है तो उनके अन्दर छिपी इस प्रतिभा को उभारने की। उन्होंने माध्यमिक स्तर पर सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थियों पर अध्ययन कर बताया कि आकांक्षा स्तर का सृजनात्मकता पर सार्थक अन्तर नहीं पड़ता।

7- पाण्डेय, प्रेम प्रकाश)2020) ने किशोर बालक एवं बालिकाओं की आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव के अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि बालक तथा बालिकाओं के आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

8- प्रभूदयाल)2019) ने माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के छात्रछात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा के तुलनात्मक अध्ययन में - पाया कि शैक्षिक आकांक्षा छात्रों को अपने लक्ष्य तक पहुँचाने मे ं मदद करती है। जिससे उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि परिवार तथा वातावरण की विशेष भूमिका होती है।

9- सिंह, नागेन्द्र कुमार)2017) ने किशोरों की शैक्षिक आकांक्षा तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि किशोरों की माध्यमिक स्तर पर क्षेत्र तथा लिंग के आधार पर शैक्षिक आकांक्षा का स्तर छात्रों में भिन्नभिन्न - होता है और शैक्षिक आकांक्षा तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सकारात्मक सम्बन्ध होता है।

प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं विवेचन -

1- परिकल्पना अनाथालयो -ं में धर्म के (हिन्दू एवं मुस्लिम)आधार पर अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2- अनाथालयों में धर्म के आधार पर अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमान (हिन्दू एवं मुस्लिम), मानक विचलन एवं टीअनुपात-

सारणी क्रमांक-01

धर्म	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन		मध्यमान में अन्तर	अनुपात-टी	स्वतन्त्रत के अंश	सार्थकता स्तर
हिन्दू	25	26.04	3.23	0.88	0.706	48	0.05 स्तर पर असमर्थक	
मुस्लिम	25	26.92	5.32					

व्याख्या -

सारणी क्रमांक-01 से स्पष्ट है कि अनाथालयों के हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म के अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमानों के मध्य टी अनुपात का परिगणित मान-0.706 प्राप्त हुआ, जो क ित्र 48 पर मानकीकृत सारणी मान 1.96 से कम है, जो कि 0.05 स्तर पर असार्थक है। अतः अनाथालयों में धर्म के आधार पर अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अनाथालयों के हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म के अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा के अंकों का मध्यमान क्रमशः 26.04 व 26.92 तथा मानक विचलन क्रमशः 3.23 व 5.32 है। मध्यमानों के अन्तर से स्पष्ट है कि अनाथालयों के हिन्दू धर्म के अन्तेवासी बच्चों का मध्यमान मुस्लिम धर्म के अन्तेवासी बच्चों की तुलना में 0.88 कम है मध्यमानों की सार्थकता ज्ञात करने पर अंतर नहीं पाया गया, अतः हमारी शून्य परिकल्पना, अनाथालयों में धर्म के आधार पर अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकृत की जाती है।

2-परिकल्पना -

अनाथालयों में क्षेत्र के आधार पर अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर कोई सार्थक अन्तर (ग्रामीण एवं शहरी) नहीं है।

अनाथालयों में क्षेत्र के आधार पर अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमान (ग्रामीण एवं शहरी), मानक विचलन एवं टी-

अनुपात।

सारणी क्रमांक-2

क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन		मध्यमान में अन्तर	अनुपात-टी	स्वतन्त्रत के अंश	सार्थकता स्तर
ग्रामीण	40	25.72	5.44	0.8	0.761	78	0.05 स्तर पर असमर्थक	
शहरी	40	26.52	3.80					

व्याख्या -

सारणी क्रमांक 02 से स्पष्ट है कि अनाथालयों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा के मध्यमानों के मध्य टी अनुपात का परिगणित मान-0.761 प्राप्त हुआ, जो कज त्र 78 पर मानकीकृत सारणी मान 1.96 से कम है, जो कि 0.05 स्तर पर असार्थक है। अतः अनाथालयों में क्षेत्र के आधार पर अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर (ग्रामीण एवं शहरी) पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अनाथालयों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा के अंकों का मध्यमान क्रमशः 25.72 व 26.52 तथा मानक विचलन क्रमशः 5.44 व 3.80 है। मध्यमानों के अन्तर से स्पष्ट है कि अनाथालयों के ग्रामीण क्षेत्र के अन्तेवासी बच्चों का मध्यमान, शहरी क्षेत्र के अन्तेवासी बच्चों की तुलना में 0.8 कम है। मध्यमानों की सार्थकता ज्ञात करने पर अंतर नहीं पाया गया, अतः हमारी शून्य परिकल्पना, अनाथालयों में क्षेत्र के आधार पर अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर (ग्रामीण एवं शहरी) पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है, स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष -

1- अनाथालयों में धर्म के आधार पर अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर कोई सार्थक अन्तर (हिन्दू एवं मुस्लिम) नहीं है। अतः अनाथालयों में धर्म के आधार पर अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा समान है।
2- अनाथालयों में क्षेत्र के आधार पर अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर कोई सार्थक अन्तर (ग्रामीण एवं शहरी) नहीं है। अतः अनाथालयोंमें क्षेत्र के आधार पर अन्तेवासी बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा समान है। (ग्रामीण एवं शहरी)

सुझाव -

1- अनाथ बच्चों की शैक्षिक आकांक्षाओं के स्तर का विकास करने के लिये उन्हें समयसमय पर प्रशासन के उच्च - अधिकारियों, देश व प्रदेश और शहर का नेतृत्व कर रहे, सम्मानित सदस्यों के द्वारा उनके बीच प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिये।
2- इन संस्थानों में अनाथ बच्चों का आर्थिक भविष्य सुरक्षित करने के लिये व्यावसायिक या कौशल विकास से सम्बन्धित कार्यक्रम चलाने चाहिए।
3- मातापिता के अभाव के बावजूद-, अनाथालयों का सहायक वातावरण अनाथ बच्चों को उच्च स्तर की शैक्षिक आकांक्षायें प्रदान करने में मदद करता है।
4- अनाथ बच्चों को हेय दृष्टि से न देखते हुये समाज में उनकी समान भागीदारी सुनिश्चित की जाये। यदि समाज में अनाथ बच्चों की शैक्षिक आकांक्षा का स्तर निम्न होगा तो सम्पूर्ण समाज इससे प्रभावित हुये बिना नहीं रहेगा।
5- अनाथालयों में अनाथ बच्चांे के लिये एक लोकतन्त्रात्मक वातावरण होना चाहिये जिससे वह अपनी मन की बात स्वतन्त्रता पूर्वक कह सकें।
6- हम सभी को अनाथ बच्चों के साथ अधिक सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।
7- हम सभी को अनाथ बच्चों के साथ आत्मानुभूति का भाव रखना चाहिए।

संदर्भः-

1- चौहान आर0 और पाठक पी0डी0, (2018), शिक्षा में मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, पृ0सं0-127
2- सक्सेना एन0आर0एस0, (2011), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ0सं0-494

3- गौतम डा0 वी0, (2021), रीवा विकास खण्ड के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक शालाओं में छात्रों की शैक्षिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्यन 4(1), 40-43
4- दास, और सन्मय)2024), स्नातक स्तर पर छात्रों के बीच शैक्षिक आकांक्षा पर एक अध्ययन, जर्नल आफ विजुअल एंड परफोंमिंग आर्ट्स, बोल्यूम :5(6), पृष्ठ सं0-2458-2466 https://doi/org/10.2921/Shodhkosh.v5.i6.2024.3140
5- नारायण एस0, (2023), सामान्य एवं आरक्षित वर्ग के छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा एवं शैक्षिकः उपलब्धि का अध्ययन, 29(1), 16-20, DOI:10152228/JRUA-2023-29-1-3
6- गुप्ता आर, (2023), स्नातक स्तर के छात्रछात्राओं की शै-क्षिक आकांक्षाओं का उनकी संवेगात्मक बुद्धि के सन्दर्भ में अध्ययन, 11(7), DOI:10152228/JRUA-2023-29-1-3
7- रानी पी0, (2023), अनाथ व सामान्य छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन, 02 (09), 203-207 d103-d110, ISSN: 2320-2882
8- चण्डहोक, दिव्या)2023), प्राथमिक शिक्षकों के आकांक्षा स्तर का उनकी व्यावसायिक सन्तुष्टि से सम्बन्ध का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल आफ नोवल रिसर्च एण्ड डवलपमेन्ट, वाल्यूम :8(5) पृ0सं0-1241-1244, ISSN:2456.4184
9- कुमावत, सुनीता)2022), माध्यमिक स्तर के आकांक्षा स्तर का उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, इण्टरनेशनल जर्नल माफ क्रिएटिव रिसर्च थाटस, वाल्यूम 10(5) पृष्ठ-360-362, ISSN:2320.2882
10- पाण्डेय पी0पी0, (2020), किशोर बालक बालिकाओं को आकांक्षा स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव, 5(7), H1-H7, ISSN: 2456-5474
11- भारद्वाज आर0के0 और प्रभू दयाल, (2019), माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन, 4(2), H1-H4, PISSN : 2394-0344
12- सिंह एन0के0, (2017), किशोरी की शक्षिक आकांक्षा तथा शैक्षिक उपलब्धि, 3(3), 55-59, ISSN:55.2232